बृहद्देशी एवं नारदीय शिक्षा ग्रंथ का परिचय

बृहद्देशी- इस ग्रन्थ के समय के विषय में अनेक मत हैं। कुछ विद्वान इसे तीसरी शताब्दी ~~के~~ का, कुछ चौथी शताब्दी का कुछ पाँचवीं शताब्दी का और कुछ 6वीं शताब्दी का मानते हैं इस ग्रन्थ के रचयिता ~~मतङ्ग~~ मतंग मुनि थे। इस ग्रंथ में निम्नलिखित सामग्रियाँ प्राप्त होती हैं :—

Scanned with CamScanner

1) संगीत के इतिहास में प्रथम बार इसी ग्रंथ में 'राग' शब्द स्थापित किया गया है और आज राग का कितना महत्व है किसी से छिपा नहीं है।

2) इसमें ग्राम और मूर्छना का विस्तृत वर्णन है किन्तु गन्धार ग्राम का उल्लेख मात्र किया गया है।

3) इसमें साम गायन के प्रारम्भिक तीन स्वरों का वर्णन है।

4) इसमें दत्तिल के समान संवादी स्वरों की दूरी 9 अथवा 13 श्रुतियों की तथा विवादी स्वर की 20 श्रुतियाँ मानी गई हैं।

5) इस ग्रंथ में वर्णित जाति के 10 लक्षण भरतकृत नाट्यशास्त्र के सदृश हैं।

6) जाति के 7 प्रकारों में राग-जाति भरत के समान माने गये।

नारद लिखित नारदीय शिक्षा :- इस ग्रंथ की रचना-काल के विषय में भी विद्वानों के अनेक मत हैं। अधिकांश विद्वान इसे 10वीं और 12वीं शताब्दी के बीच का मानते हैं। इसमें सामवेदीय स्वरों और 7 ग्राम रागों, जैसे - षाडव, मध्यम, षड्ज, साधारिता आदि का विशेष उल्लेख है

Scanned with CamScanner

यह ध्यान रहे कि यह नारद ब्रह्मा के पुत्र पौराणिक नारद नहीं हैं, ये सभी ग्रंथ संहिता काल के ग्रंथ हैं।

Scanned with CamScanner